IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

आधुनिक संस्कृत साहित्य में नवीनता

Dr. Deen Dayal Sharma

Principal, Smt. Motadevi College, Mahwa, District-Dausa, Rajasthan, India

सार

संस्कृत भाषा और साहित्य का विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान है। विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं और उनके साहित्य (वाङ्मय) में संस्कृत का ख़ास महत्व है। यह महत्व अनेक कारणों और दृष्टियों से है। भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, अध्यात्मिक, दर्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की संपूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय के माध्यम से आज उपलब्ध है। सहस्राब्दियों से संस्कृत भाषा और इसके वाङ्मय की भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त रही है। भारत की यह सांस्कृतिक भाषा रही है। सहस्राब्दियों तक समग्र भारत को सांस्कृतिक और भावात्मक एकता में आबद्ध रखने को इस भाषा ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसी कारण भारतीय मनीषा ने इस भाषा को 'अमरभाषा' या 'देववाणी' के नाम से सम्मानित किया है।साहित्य निर्माण-ऋग्वेद काल से लेकर आज तक इस भाषा के माध्यम से सभी प्रकार के वाङ्मय का निर्माण होता आ रहा है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक किसी न किसी रूप में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन अब तक होता चला आ रहा है। भारतीय संस्कृति और विचारधारा का माध्यम होकर भी यह भाषा अनेक दृष्टियों से धर्मनिरपेक्ष रही है। धार्मिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और मानविकी आदि प्राय: समस्त प्रकार के वाङ्मय की रचना इस भाषा में हुई है। ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक संस्कृत भाषा के माध्यम से सभी प्रकार के वाङ्मय का निर्माण होता आ रहा है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक किसी न किसी रूप में संस्कृत का अध्ययन अध्यापन अब तक होता चल रहा है। भारतीय संस्कृति और विचार की धारा का माध्यम होकर भी यह भाषा अनेक दृष्टियों से धर्मनिरपेक्ष (सेक्यूलर) रही है। इस तरह भाषा में धार्मिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक औजूझ संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रंथरत्नों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी प्राचीन भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घ काल तक रहने पाई है। अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा की सृजन-शक्ति कुण्ठित नहीं हुई, इसका धातुपाठ नित्य नये शब्दों को गढ़ने में समर्थ रहा है।

परिचय

प्रदेश में संस्कृत भाषा में विद्यार्थियों को शिक्षा दिलाने के लिये स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान के माध्यम से 5 आदर्श संस्कृत विद्यालय सिरोंज, दतिया, उज्जैन, बुरहानपुर और कटनी जिले के बरही में संचालित किये जा रहे हैं। इन विद्यालयों में परंपरागत विधि दी जा रही संस्कृत की शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिये आधुनिक पद्धति का उपयोग किया जा रहा है। इन सभी विद्यालयों में संस्कृत और इसके साहित्य को शामिल करते हुए स्वरोजगार पाठ्यक्रम से जोड़ा गया है।महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान की विद्या परिषद् में कक्षा एक से 12 तक नवीन पाठ्यक्रम निर्मित कर 58 संस्कृत पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करने के लिये 5 करोड़ रूपये मंजूर किये गये हैं।[1] संस्थान से संबद्ध 36 संस्कृत विद्यालयों को कम्प्यूटर प्रदान किये गये हैं। संस्थान द्वारा व्यवसायिक पाठ्यक्रम के रूप में व्यवहारिक ज्योतिष शास्त्र का डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।[2]

ऋग्वेदसंहिता के कतिपय मंडलों की भाषा संस्कृत वाणी का सर्वप्राचीन उपलब्ध स्वरूप है। ऋग्वेदसंहिता इस भाषा का पुरातनतम ग्रंथ है। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ऋग्वेदसंहिता केवल संस्कृत भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ नहीं है, -पितु वह आर्य जाति की संपूर्ण ग्रंथराशि में भी प्राचीनतम ग्रंथ है। दूसरे शब्दों में, समस्त विश्व वाङ्मय का वह (ऋक्संहिता) [3]सबसे पुरातन उपलब्ध ग्रंथ है। दस मंडलों के इस ग्रंथ का द्वितीय से सप्तम मंडल तक का अंश प्राचीनतम और प्रथम तथा दशम मंडल अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक उस भाषा की अखंड और अविच्छिन्न परंपरा चली आ रही है। ऋक्संहिता केवल भारतीय वाङ्मय की ही अमूल्य निधि नहीं है, वह समग्र आर्य जाति की, समस्त विश्व वाङ्मय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विरासत है।[1]

विश्व की प्राचीन प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का जो अध्ययन हुआ है, उसमें कदाचित् आर्य जाति से संबद्ध अनुशीलन का विशिष्ट स्थान है। इस वैशिष्ट्य का कारण यही ऋग्वेदसंहिता है। आर्य जाति की आद्यतम निवास भूमि, उनकी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक जीवन आदि के विषय में अनुशीलन हुए हैं। ऋक्संहिता उन सबका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत रहा है। पश्चिम के विद्वानों ने संस्कृत भाषा और ऋक्संहिता से परिचय पाने के कारण ही तुलनात्मक भाषा-विज्ञान के अध्ययन को सही दिशा दी तथा आर्य

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

भाषाओं के भाषाशास्त्रीय विवेचन में प्रौढ़ि एवं शास्त्रीयता का विकास हुआ। भारत के वैदिक ऋषियों और विद्वानों ने अपने वैदिक वाङ्मय को मौखिक और श्रुतिपरंपरा द्वारा प्राचीनतम रूप में अत्यंत सावधानी के साथ सुरक्षित और अधिकृत अनाए रखा।[4] किसी प्रकार के ध्वनिपरक, मात्रापरक यहाँ तक कि स्वरपरक परिवर्तन से पूर्णत: बचाते रहने का नि:स्वार्थ भाव में वैदिक वेदपाठी सहस्राब्दियों तक अथक प्रयास करते रहे। 'वेद' शब्द से मंत्रभाग (संहिताभाग) और 'ब्राह्मण' का बोध माना जाता था। 'ब्राह्मण' भाग के तीन अंश- ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् कहे गए हैं। लिपिकला के विकास से पर्व मौखिक परंपरा द्वारा वेदपाठियों ने इनका संरक्षण किया। बहुत-सा वैदिक वाङ्मय धीरे-धीरे लुप्त हो गया है। पर आज भी जितना उपलब्ध है, उसका महत्व असीम है। भारतीय दृष्टि से वेद को 'अपौरुषेय' माना गया है। कहा जाता है, मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने मंत्रों का साक्षात्कार किया। आधुनिक जगत् इसे स्वीकार नहीं करता। फिर भी यह माना जाता है कि वेदव्यास ने वैदिक मंत्रों का संकलन करते हुए संहिताओं के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित किया। अत: संपूर्ण भारतीय संस्कृति वेदव्यास की युग-युग तक ऋणी बनी रहेगी। ऋक्संहिता की भाषा को संस्कृत का आद्यतम उपलब्ध रूप कहा जा सकता है।[5] यह भी माना जाता है कि उक्त संहिता के प्रथम और दशम मंडलों की भाषा प्राचीनतर है। कुछ विद्वान् प्राचीन वैदिक भाषा को परवर्ती पाणिनीय (लौकिक) संस्कृत से भिन्न मानते हैं। पर यह पक्ष भ्रमपूर्ण है। वैदिक भाषा अभ्रांत रूप से संस्कृत भाषा का आद्य उपलब्ध रूप है। पाणिनि ने जिस संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा है, उसके दो अंश हैं-[6]

1. वैदिक भाषा, जिसे 'अष्टाध्यायी' में 'छंदप्' कहा गया है।
2. भाषा, जिसे लोकभाषा या लौकिक भाषा के रूप में रखा गया है।[1]

भाषा के लिए प्रथम प्रयोग

'व्याकरण महाभाष्य' नाम से प्रसिद्ध आचार्य पतंजलि के शब्दानुशासन में भी वैदिक भाषा और लौकिक भाषा के शब्दों का आरंभ में उल्लेख हुआ है।[5] 'संस्कृत नाम दैंवी वागन्वाख्याता महर्षिभि:' के द्वारा जिसे देवभाषा या संस्कृत कहा गया है, उसे संभवत: यास्क, पाणिनि, कात्यायन और पंतजलि के समय तक छंदोभाषा (वैदिक भाषा) और लोकभाषा के दो नामों, स्तरों और रूपों द्वारा व्यक्त किया गया था। बहुत-से विद्वानों का मत है कि भाषा के लिए 'संस्कृत' का प्रयोग सर्वप्रथम 'वाल्मीकि रामायण' के 'सुंदरकांड' (30 सर्ग) में हनुमन् द्वारा विशेषण रूप से (संस्कृता वाक्) किया गया है। भारतीय परंपरा की किंवदंती के अनुसार संस्कृत भाषा पहले अव्याकृत थी, उसके प्रकृति, प्रत्ययादि का विश्लिष्ट विवेचन नहीं हुआ था। देवों द्वारा प्रार्थना करने पर देवराज इंद्र ने प्रकृति ने प्रकृति, प्रत्यय आदि के विश्लेषण विवेचन का उपायात्मक विधान प्रस्तुत किया। इसी 'संस्कार' विधान के कारण भारत की प्राचीनतम आर्य भाषा का नाम 'संस्कृत' पड़ा। ऋक्संहिताकालीन साधु भाषा तथा 'ब्राह्मण', 'आरण्यक' और 'दशोपनिषद्' की साहित्यिक वैदिक भाषा के अनंतर उसी का विकसित स्वरूप लौकिक संस्कृत' या 'पाणिनीय संस्कृत' हुआ। इसे ही 'संस्कृत' या संस्कृत भाषा कहा गया।[7] पर आज के कुछ भाषाविद संस्कृत को संस्कार द्वारा बनाई गई कृत्रिम भाषा मानते हैं। ऐसा मानते हैं कि इन संस्कृत का मूलाधार पूर्वतर काल को उदीच्य, मध्यदेशीय या आर्यावर्तीय विभाषाएँ थीं। 'विभाषा' या 'उदीचाम्' शब्द से पाणिनि सूत्रों में इनका उल्लेख उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त भी 'प्राच्य' आदि बोलियाँ थीं। परंतु 'पाणिनि' ने भाषा का एक सार्वदेशिक और सर्वभारतीय परिष्कृत रूप स्थिर कर दिया। धीरे धीरे पाणिनि संमत भाषा का प्रयोग रूप और विकास प्राय: स्थायी हो गया। पतंजलि के समय तक 'आर्यावर्त' (आर्यनिवास) के शिष्ट जनों में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी।[2] पर शीघ्र ही वह समग्र भारत के द्विजातिवर्ग और विद्वत्समाज की सांस्कृतिक और आकर भाषा हो गई। संस्कृत भाषा के विकास स्तरों की दृष्टि से अनेक विद्वानों ने अनेक रूप से इसका ऐतिहासि काल विभाजन किया है।[8] सामान्य सुविधा की दृष्टि से अधिक मान्य निम्नांकित काल विभाजन इस प्रकार है-

1. आदिकाल, वेदसंहिताओं और वाङ्मय का काल - ई. पू. 4500 से 800 ई. पू. तक
2. मध्य काल, ई. पू. 800 से 800 ई. तक, जिसमें शास्त्रों दर्शनसूत्रों, वेदांग ग्रंथों, काव्यों तथा कुछ प्रमुख साहित्यशास्त्रीय ग्रंथों का निर्माण हुआ।
3. परवर्तीकाल, 800 ई. से लेकर 1600 ई. या अब तक का आधुनिक काल-जिस युग में काव्य, नाटक, साहित्यशास्त्र, तंत्रशास्त्र, शिल्पशास्त्र आदि के ग्रंथों की रचना के साथ साथ मूल ग्रंथों की व्याख्यात्मक, कृतियों की महत्वपूर्ण सर्जना हुई।[9]

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान द्वारा उज्जैन में जीवाजी वेधशाला का संचालन किया जा रहा है। इस वेधशाला की गिनती देश की प्राचीनतम् वेधशाला के रूप में होती है। इसका निर्माण सवाई राजा जयसिंह ने वर्ष 1719 में करवाया था। पर्यटकों को प्राचीन वेधशाला की जानकारी देने के लिये वेबसाईट www.jiwajiobervatory.org तैयार की गई है। वेबसाईट में प्राचीन यंत्रों, मौसम यंत्रों, पंचांग, पुस्तकों, फोटो गैलरी एवं वेधशाला के कार्यो को स्थान दिया गया है। प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर द्वारा इलेक्ट्रॉनिक बैरोमीटर वेधशाला में लगाया गया है। वेधशाला के पुस्तकालय में प्राचीन ग्रंथों के डिजिटलाइजेशन का कार्य पूर्ण किया जा चुका है। वेधशाला में प्राचीन ग्रंथों को सुरक्षित रखने के मकसद से करीब डेढ़ लाख पृष्ठों को स्केन भी किया गया है।[10]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

भाष्य, टीका, विवरण, व्याख्यान आदि के रूप में जिन सहस्रों ग्रंथों का निर्माण हुआ, उनमें अनेक भाष्य और टीकाओं की प्रतिष्ठा, मान्यता और प्रसिद्धि मूलग्रंथों से भी कहीं-कहीं अधिक हुई। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक विद्वानों के अनुसार भी संस्कृत भाषा का अखंड प्रवाह पाँच सहस्र वर्षों से बहता चला आ रहा है। भारत में यह आर्य भाषा का सर्वाधिक महत्वशाली, व्यापक और संपन्न स्वरूप है। इसके माध्यम से भारत की उत्कृष्टतम मनीषा, प्रतिभा, अमूल्य चिंतन, मनन, विवेक, रचनात्मक, सर्जना और वैचारिक प्रज्ञा का अभिव्यंजन हुआ है। आज भी सभी क्षेत्रों में इस भाषा के द्वारा ग्रंथ निर्माण की क्षीण धारा अविच्छिन्न रूप से वह रही है। आज भी यह भाषा, अत्यंत सीमित क्षेत्र में ही सही, बोली जाती है। इसमें व्याख्यान होते हैं और भारत के विभिन्न प्रादेशिक भाषा-भाषी पंडितजन इसका परस्पर वार्तालाप में प्रयोग करते हैं। हिंदुओं के सांस्कारिक कार्यों में आज भी यह प्रयुक्त होती है। इसी कारण ग्रीक और लैटिन आदि प्राचीन मृत भाषाओं से संस्कृत की स्थिति भिन्न है।[11] यह मृतभाषा नहीं, अमरभाषा है।ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत भाषा आर्य भाषा परिवार के अंतर्गत रखी गई है। आर्य जाति भारत में बाहर से आई या यहाँ इसका निवास था, इत्यादि विचार अनावश्यक होने से यहाँ नहीं किया जा रहा है, पर आधुनिक भाषा विज्ञान के पंडितों की मान्यता के अनुसार भारत यूरोपीय भाषा-भाषियों की जो नाना प्राचीन भाषाएँ[3] थीं, वे वस्तुत: एक मूलभाषा की[4] देशकालानुसारी विभिन्न शाखाएँ थीं। उन सबकी उद्गमभाषा या मूलभाषा को आद्य आर्य भाषा कहते हैं। कुछ विद्वानों के मत में-वीरा-मूल निवास स्थान के वासी सुसंगठित आर्यों को ही 'वीरोस' या वीरास् (वीरा:) कहते थे। वीरोस् (वीरो) शब्द द्वारा जिन पूर्वोक्त प्राचीन आर्य भाषा समूह भाषियों का द्योतन होता है, उन विविध प्राचीन भाषा-भाषियों को विरास (संवीरा:) कहा गया है। अर्थात् समस्त भाषाएँ पारिवारिक दृष्टि से आर्य परिवार की भाषाएँ हैं। संस्कृत का इनमें अन्यतम स्थान है। उक्त परिवार की 'केंतुम्' और 'शतम्'[5] दो प्रमुख शाखाएँ हैं। प्रथम के अंतर्गत ग्रीक, लातिन आदि आती हैं। संस्कृत का स्थान 'शतम्' के अंतर्गत भारत-ईरानी शाखा में माना गया है।[1]आर्य परिवार में कौन प्राचीन, प्राचीनतर और प्राचीनतम है,[12] यह पूर्णत: निश्चित नहीं है। फिर भी आधुनिक अधिकांश भाषाविद ग्रीक, लातिन आदि को आद्य आर्य भाषा की ज्येष्ठ संतति और संस्कृत को उनकी छोटी बहिन मानते हैं। इतना ही नहीं भारत-ईरानी-शाखा की प्राचीनतम अवस्ता को भी संस्कृत से प्राचीन मानते हैं। परंतु अनेक भारतीय विद्वान् समझते हैं कि 'जिद-अवस्ता' की अवस्ता का स्वरूप ऋक्भाषा की अपेक्षा नव्य है। जो भी हो, इतना निश्चित है कि ग्रंथ रूप में स्मृति रूप से अवशिष्ट वाङ्मय में ऋक्संहिता प्राचीनतम है और इसी कारण वह भाषा भी अपनी उपलब्धि में प्राचीनतम है।[13] उसकी वैदिक संहिताओं की बड़ी विशेषता यह है कि हजारों वर्षों तक जब लिपि कला का भी प्रादुर्भाव नहीं था, वैदिक संहिताएँ मौखिक और श्रुति परंपरा द्वारा गुरु-शिष्यों के समाज में अखंड रूप से प्रवहमान थीं। उच्चारण की शुद्धता को इतना सुरक्षित रखा गया कि ध्वनि ओर मात्राएँ, ही नहीं, सहस्रों वर्षों पूर्व से आज तक वैदिक मंत्रों में कहीं पाटभेद नहीं हुआ। उदात्त अनुदात्तादि स्वरों का उच्चारण शुद्ध रूप में पूर्णत: अविकृत रहा। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक यह मानते हैं कि स्वरों की दृष्टि से ग्रीक, लातिन आदि के 'केंतुम्' वर्ग की भाषाएँ अधिक संपन्न भी हैं और मूल या आद्य आर्य भाषा के अधिक समीप भी। उनमें उक्त भाषा की स्वर संपत्ति अधिक सुरक्षित हैं। संस्कृत में व्यंजन संपत्ति अधिक सुरक्षित है। भाषा के संघटनात्मक अथवा रूपात्मक विचार की दृष्टि से संस्कृत भाषा को विभक्ति प्रधान अथवा 'श्लिष्टभाषा' कहा जाता है।[14]

प्रामाणिकता के विचार से इस भाषा का सर्वप्राचीन उपलब्ध व्याकरण पाणिनि की अष्टाध्यायी है। कम से कम 600 ई. पू. का यह ग्रंथ आज भी समस्त विश्व में अतुलनीय व्याकरण है। विश्व के और मुख्यत: अमरीका के भाषाशास्त्री संघटनात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि से अष्टाध्यायी को आज भी विश्व का सर्वोत्तम ग्रंथ मानते हैं। 'ब्रूमफील्ड' ने अपने 'लैंग्वेज' तथा अन्य कृतियों में इस तथ्य की पुष्ट स्थापना की है। पाणिनि के पूर्व संस्कृत भाषा निश्चय ही शिष्ट एवं वैदिक जनों की व्यवहार भाषा थी। असंस्कृत जनों में भी बहुत सी बोलियाँ उस समय प्रचलित रही होंगी। पर यह मत आधुनिक भाषाविज्ञों को मान्य नहीं है। वे कहते हैं कि संस्कृत कभी भी व्यवहार भाषा नहीं थी। जनता की भाषाओं को तत्कालीन प्राकृत कहा जा सकता है। देवभाषा तत्वत: कृत्रिम या संस्कार द्वारा निर्मित ब्राह्मण पंडितों की भाषा थी, लोकभाषा नहीं। परंतु यह मत सर्वमान्य नहीं है।पाणिनि से लेकर पतंजलि तक सभी ने संस्कृत का लोक की भाषा कहा है, लौकिक भाषा बताया है। अन्य सैकड़ों प्रमाण सिद्ध करते हैं कि 'संस्कृत' वैदिक और वैदिकोत्तर पूर्व पाणिनिकाल में लोकभाषा और व्यवहार भाषा थी।[15] यह अवश्य रहा होगा कि देश, काल और समाज के संदर्भ में उसकी अपनी सीमा रही होगी। बाद में चलकर वह पठित समाज की साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा बन गई। तदनंतर यह समस्त भारत में सभी पंडितों की, चाहे वे आर्य रहें हों या आर्येतर जाति के, सभी की, सर्वमान्य सांस्कृतिक भाषा हो गई और आसेतु हिमाचल इसका प्रसार, समादर और प्रचार रहा एवं आज भी बना हुआ है।विश्वभाषा-लगभग सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से यूरोप और पश्चिमी देशों के मिशनरी एवं अन्य विद्याप्रेमियों को संस्कृत का परिचय प्राप्त हुआ। धीरे-धीरे पश्चिम में ही नहीं, समस्त विश्व में संस्कृत का प्रचार हुआ। जर्मन, अंग्रेज़, फ़्राँसीसी, अमरीकी तथा यूरोप के अनेक छोटे बड़े देश के निवासी विद्वानों ने विशेष रूप से संस्कृत के अध्ययन अनुशीलन को आधुनिक विद्वानों में प्रजाप्रिय बनाया। आधुनिक विद्वानों और अनुशीलकों के मत से विश्व की पुराभाषाओं में संस्कृत सर्वाधिक व्यवस्थित, वैज्ञानिक और संपन्न भाषा है।[16] वह आज केवल भारतीय भाषा ही नहीं, एक रूप से विश्वभाषा भी है। यह कहा जा सकता है कि भूमंडल के प्रयत्न-भाषा-साहित्यों में कदाचित् संस्कृत का वाङ्मय सर्वाधिक विशाल, व्यापक, चतुर्मुखी और संपन्न है। संसार के प्राय: सभी विकसित और संसार के प्राय: सभी विकासमान देशों में संस्कृत भाषा और साहित्य का आज अध्ययन-अध्यापन हो रहा है।[1]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

संस्कृत भाषा के महत्व पर शंका करना अपने अस्तित्व पर शंका करने के बराबर है, क्योंकि जब तक मानव है, संस्कृत का महत्व तब तक असीम है। यह केवल वर्तमान भारत भूभाग की ही आधारशिला नहीं, अपितु मानवता की आधारशिला है।वर्तमान समय में जब भी हम संस्कृत भाषा के महत्व की समीक्षा करते हैं, तब हम अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के समानांतर इस भाषा को रखकर विचार करते हैं कि जैसे उन भाषाओं के ज्ञाता को धन की उपलब्धि होती है अथवा आजीविका मिलती है[17] तो क्या ऐसा संस्कृत जानने वाले को भी उपलब्ध होगा?संस्कृत भाषा के इस पक्ष में आई न्यूनता का मुख्य आधार परतंत्र इतिहास और स्वतंत्रता के बाद के शासन की त्रुटि है। इस पक्ष के अतिरिक्त आइए संस्कृत भाषा का महत्व विचारते हैं ।विश्व का सबसे प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ ऋग्वेद है। यह तथ्य सर्वमान्य है। मैक्समूलर ने यहाँ तक कहा है, "जब तक मानव अपने इतिहास में रुचि लेता रहेगा और जब तक हम अपने पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों में प्राचीन युग की स्मृतियों के चिन्ह सँजोए रहेंगे, तब तक मानव जाति के अभिलेखों से भरी-पूरी पुस्तकों की पंक्तियों के बीच पहली पुस्तक ऋग्वेद ही रहेगी।[18]" विश्वभर की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सर्वप्रथम और उच्च स्थान है। विश्व-साहित्य की पहली पुस्तक ऋग्वेद इसी भाषा का देदीप्यमान रत्न है। भारतीय संस्कृति का रहस्य इसी भाषा में निहित है। संस्कृत का अध्ययन किये बिना भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कभी सम्भव नहीं है।[19]

अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं की यह जननी है। आज भी भारत की समस्त भाषाएँ इसी वात्सल्यमयी जननी के स्तन्यामृत से पुष्टि पा रही हैं। पाश्चात्य विद्वान इसके अतिशय समृद्ध और विपुल साहित्य को देखकर आश्चर्य-चकित होते रहे हैं। भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी यदि कोई भाषा है तो वह संस्कृत ही है।[20]

विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं और उनके साहित्य (वाङ्मय) में संस्कृत का अपना विशिष्ट महत्त्व है। यह महत्त्व अनेक कारणों और दृष्टियों से है। भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, अध्यात्मिक, दर्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की संपूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय के माध्यम से आज उपलब्ध है। सहस्राब्दियों से इस भाषा और इसके वाङ्मय को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त रही है। भारत की यह सांस्कृतिक भाषा रही है। सहस्राब्दियों तक समग्र भारत को सांस्कृतिक और भावात्मक एकता में आबद्ध रखने को इस भाषा ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसी कारण भारतीय मनीषा ने इस भाषा को अमरभाषा या देववाणी के नाम से सम्मानित किया है। ऋग्वेदसंहिता के कतिपय मंडलों की भाषा संस्कृतवाणी का सर्वप्राचीन उपलब्ध स्वरूप है। ऋग्वेदसंहिता इस भाषा का पुरातनतम ग्रंथ है।[21] यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ऋग्वेदसंहिता केवल संस्कृतभाषा का प्राचीनतम ग्रंथ नहीं है - अपितु वह आर्य जाति की संपूर्ण ग्रंथराशि में भी प्राचीनतम ग्रंथ है। दूसरे शब्दों में, समस्त विश्ववाङ्मय का वह (ऋक्संहिता) सबसे पुरातन उपलब्ध ग्रंथ है। दस मंडलो के इस ग्रंथ का द्वितीय से सप्तम मंडल तक का अंश प्राचीनतम और प्रथम तथा दशम मंडल अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक उस भाषा की अखंड और अविच्छिन्न परंपरा चली आ रही है। ऋक्संहिता केवल भारतीय वाङ्मय की ही अमूल्य निधि नहीं है - वह समग्र आर्यजाति की, समस्त विश्ववाङ्मय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विरासत है।[22]

विश्व की प्राचीन प्रागैतिहासिक संस्कृतियों को जो अध्ययन हुआ है, उसमें कदाचित् आर्यजाति से संबद्ध अनुशीलन का विशिष्ट स्थान है। इस वैशिष्ट्य का कारण यही ऋग्वेदसंहिता है। आर्यजाति की आद्यतम निवासभूमि, उनकी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक जीवन आदि के विषय में अनुशीलन हुए हैं ऋक्संहिता उन सबका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत रहा है। पश्चिम के विद्वानों ने संस्कृत भाषा और ऋक्संहिता से परिचय पाने के कारण हो तुलनात्मक भाषाविज्ञान के अध्ययन को सही दिशा दी तथा आर्यभाषाओं के भाषाशास्त्रीय विवेचन में प्रौढ़ि एवं शास्त्रीयता का विकास हुआ। भारत के वैदिक ऋषियों और विद्वानों ने अपने वैदिक वाङ्मय को मौखिक और श्रुतिपरंपरा द्वारा प्राचीनतम रूप में अत्यंत सावधानी के साथ सुरक्षित और अधिकृत अनाए रखा। किसी प्रकार के ध्वनिपरक, मात्रापरक यहाँ तक कि स्वर (ऐक्सेंट) परक परिवर्तन से पूर्णत: [24]बचाते रहने का नि:स्वार्थ भाव में वैदिक वेदपाठी सहस्रब्दियों तक अथक प्रयास करते रहे। "वेद" शब्द से मंत्रभाग (संहिताभाग) और "ब्राह्मण" का बोध माना जाता था। "ब्राह्मण" भाग के तीन अंश - (1) ब्राह्मण, (2) आरण्यक और (3) उपनिषद् कहे गए हैं। लिपिकला के विकास से पूर्व मौखिक परंपरा द्वारा वेदपाठियों ने इनका संरक्षण किया। बहुत सा वैदिक वाङ्मय धीरे-धीरे लुप्त हो गया है। पर आज भी जितना उपलब्ध है उसका महत्त्व असीम है। भारतीय दृष्टि से वेद को अपौरुषेय माना गया है। कहा जाता है, मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने मंत्रों का साक्षात्कार किया। आधुनिक जगत् इसे स्वीकार नहीं करता। फिर भी यह माना जाता है कि वेदव्यास ने वैदिक मंत्रों का संकलन करते हुए संहिताओं के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित किया। अत: संपूर्ण भारतीय संस्कृति वेदव्यास की युग-युग तक ऋणी बनी रहेगी।[23]

इसका रचनाकाल ईसा से 5500-5200 पूर्व माना जाता है। भारतीय विद्वानों ने वेदों के रचनाकाल का आरंभ ४५०० ई.पू. से माना है परन्तु यूरोपीय विद्वान इनकी रचना का काल ईसा से २०००-११०० पूर्व मानते है।[25]

विचार-विमर्श

संस्कृत भाषा का परिचय होने से ही आर्य जाति, उसकी संस्कृति, जीवन और तथाकथित मूल आद्य आर्य भाषा से संबद्ध विषयों के अध्ययन का पश्चिमी विद्वानों को ठोस आधार प्राप्त हुआ। प्राचीन ग्रीक, लातिन, अवस्ता और ऋक्संस्कृत आदि के आधार पर मूल आद्य आर्य भाषा की ध्वनि, व्याकरण और स्वरूप की परिकल्पना की जा सकी, जिससे ऋक्संस्कृत का अवदान सबसे अधिक महत्व

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

का है। ग्रीक, लातिन आदि भाषाओं के साथ संस्कृत का पारिवारिक और निकट संबंध है, पर भारत-ईरानी-वर्ग की भाषाओं के साथ[6] संस्कृत की सर्वाधिक निकटता है।[26] भारत की सभी आद्य, मध्यकालीन एवं आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास में मूलत: ऋग्वेद एवं तदुत्तरकालीन संस्कृत का आधारिक एवं औपादानिक योगदान रहा है। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक मानते हैं कि ऋग्वेद काल से ही जन सामान्य में बोलचाल की तथाभूत प्राकृत भाषाएँ अवश्य प्रचलित रही होंगी। उन्हीं से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा तदुत्तरकालीन आर्य भाषाओं का विकास हुआ। परंतु इस विकास में संस्कृत भाषा का सर्वाधिक और सर्वविध योगदान रहा है। यहीं पर यह भी याद रखना चाहिए कि संस्कृत भाषा ने भारत के विभिन्न प्रदेशों और अंचलों की आर्येतर भाषाओं को भी काफ़ी प्रभावित किया तथा स्वयं उनसे प्रभावित हुई; उन भाषाओं और उनके भाषणकर्ताओं की संस्कृति और साहित्य को तो प्रभावित किया ही, उनकी भाषाओं, शब्दकोश उनकी ध्वनिमाला और लिपिकला को भी अपने योगदान से लाभान्वित किया। भारत की दो प्राचीन लिपियाँ- ब्राह्मी (बाएँ से लिखी जानेवाली) और खरोष्ठी (दाएँ से लेख्य) थीं। [27]इनमें ब्राह्मी को संस्कृत ने मुख्यत: अपनाया।संपन्न ध्वनिमाला-भाषा की दृष्टि से संस्कृत की ध्वनिमाला पर्याप्त संपन्न है। स्वरों की दृष्टि से यद्यपि ग्रीक, लातिन आदि का विशिष्ट स्थान है, तथापि अपने क्षेत्र के विचार से संस्कृत की स्वरमाला पर्याप्त और भाषानुरूप है। व्यंजनमाला अत्यंत संपन्न है। सहस्रों वर्षों तक भारतीय आर्यों के आद्यषुतिसाहित्य का अध्यनाध्यापन गुरु शिष्यों द्वारा मौखिक परंपरा के रूप में प्रवर्तमान रहा, क्योंकि कदाचित उस युग में[7] लिपिकला का उद्भव और विकास नहीं हो पाया था। संभवत: पाणिनि के कुछ पूर्व या कुछ बाद से लिपि का भारत में प्रयोग चल पड़ा और मुख्यत: 'ब्राह्मी' को संस्कृत भाषा का वाहन बनाया गया। इसी ब्राह्मी ने आर्य और आर्यतर अधिकांश लिपियों की वर्णमला और वर्णक्रम को भी प्रभावित किया। मध्यकालीन नाना भारतीय द्रविड़ भाषाओं तथा तमिल, तेलगु आदि की वर्णमाला पर भी संस्कत भाषा और ब्राह्मी लिपि का पर्याप्त प्रभाव है। ध्वनिमाला और ध्वनिक्रम की दृष्टि से पाणिनि काल से प्रचलित संस्कृत वर्णमाला आज भी कदाचित् विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं शास्त्रीय वर्णमाला है। संस्कृत भाषा के साथ-साथ समस्त विश्व में प्रत्यक्ष या रोमन अकारांतक के रूप में आज समस्त संसार में इसका प्रचार हो गया है। यहाँ साहित्य शब्द का प्रयोग 'वाङ्मय' के लिए है। ऊपर वेद संहिताओं का उल्लेख हुआ है। [28]वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनकी अनेक शाखाएँ थीं, जिनमें बहुत-सी लुप्त हो चुकी हैं और कुछ सुरक्षित बच गई हैं, जिनके संहिताग्रंथ हमें आज उपलब्ध हैं। इन्हीं की शाखाओं से संबद्ध ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद नामक ग्रंथों का विशाल वाङ्मय प्राप्त है। वेदांगों में सर्वप्रमुख 'कल्पसूत्र' हैं, जिनके अवांतर वर्गों के रूप में और सूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र (शुल्बसूत्र भी हैं, का भी व्यापक साहित्य बचा हुआ है। इन्हीं की व्याख्या के रूप में समयानुसार धर्म संहिताओं और स्मृति ग्रंथों का जो प्रचुर वाङ्मय बना, मनुस्मृति का उनमें प्रमुख स्थान है। वेदांगों में शिक्षा-प्रातिशाख्य, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंदशास्त्र से संबद्ध ग्रंथों का वैदिकोत्तर काल से निर्माण होता रहा है। अब तक इन सबका विशाल साहित्य उपलब्ध है।[29]

आज ज्योतिष की तीन शाखाएँ- 'गणित', 'सिद्धांत' और 'फलित' विकसित हो चुकी हैं और भारतीय गणितज्ञों की विश्व को बहुत-सी मौलिक देन हैं। पाणिनि और उनसे पूर्वकालीन तथा परवर्ती वैयाकरणों द्वारा जाने कितने व्याकरणों की रचना हुई, जिनमें पाणिनि का व्याकरण-संप्रदाय 2500 वर्षों से प्रतिष्ठित माना गया और आज विश्व भर में उसकी महिमा मान्य हो चुकी है। यास्क का 'निरुक्त' पाणिनि से पूर्वकाल का ग्रंथ है और उससे भी पहले निरुक्तिविद्या के अनेक आचार्य प्रसिद्ध हो चुके थे। शिक्षाप्रातिशाख्य ग्रंथों में कदाचित ध्वनि विज्ञान, शास्त्र आदि का जितना प्राचीन और वैज्ञानिक विवेचन भारत की संस्कृत भाषा में हुआ है, वह अतुलनीय और आश्चर्यकारी है। उपवेद के रूप में चिकित्सा विज्ञान के रूप में आयुर्वेद विद्या का वैदिक काल से ही प्रचार था और उसके पंडिताग्रंथ[8] प्राचीन भारतीय मनीषा के वैज्ञानिक अध्ययन की विस्मयकारी निधि है। इस विद्या के भी विशाल वाङ्मय का कालांतर में निर्माण हुआ। इसी प्रकार धनुर्वेद और राजनीति, गांधर्ववेद आदि को उपवेद कहा गया है तथा इनके विषय को लेकर ग्रंथ के रूप में अथवा प्रसंगतिर्गत संदर्भों में पर्याप्त विचार मिलता है।[30]

अत: मानव जाति के आदिम ग्रंथ की भाषा भी आदिमा है। अर्थात् संसार की प्रथम भाषा संस्कृत भाषा है। भाषा से भावों तथा ज्ञान की अभिव्यक्ति होती है तथा भाषा स्वैच्छिक वाचिक ध्वनि संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव समाज परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करता है।[25]

संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की तरह केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है, अपितु वह मनुष्य के सर्वाधिक संपूर्ण विकास की कुंजी भी है। इस रहस्य को जानने वाले मनीषियों ने प्राचीन काल से ही संस्कृत को देव भाषा और अमृतवाणी के नाम से परिभाषित किया है।संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है। इसीलिए इसका नाम संस्कृत है। ऋग्वेद की भाषा विश्व के भाषाई अध्ययन में प्राचीनतम एवं महत्वपूर्ण स्थान रखती है। स्वयं ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर भाषा तत्व के गंभीर सिद्धांत, दार्शनिक चिंतन, भाषा की परिशुद्धता, वैज्ञानिकता तथा सूक्ष्मता को जानना आवश्यक बताया गया है।अत: मानव जाति के आदि स्रोत ग्रंथ को जानने के लिए संस्कृत का महत्व अनंत है। जो व्यक्ति ज्ञान के आदि स्रोत को नहीं जानना चाहता, उसके लिए उसकी भाषा का भी कोई महत्व नहीं है ।[26]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

देवता शब्द से अभिप्राय है – जो देते हैं या जो प्रकाश वाले हैं "दानाद्वा दीपनाद्वा"। विश्व के आदिम ग्रंथ में प्रकृति के महत्व को बहुत अधिक सूक्ष्मता से बताया गया है। क्योंकि मानव का अस्तित्व प्रकृति के सामंजस्य पर ही निर्भर करता है तथा ज्ञान नैमित्तिक है, मनुष्य उसे प्रकृति से सीखता है। अत: उन ग्रंथों में सृष्टि के हर उस पदार्थ को जो मनुष्य को कुछ देता है, देवता या देव कहकर संबोधित किया गया है।वेद में सृष्टि की दैवीय शक्तियों का मनुष्य को बोध (ज्ञान) कराया गया है। उस ज्ञान कराने की शैली स्तुति परक है। स्तुति के माध्यम से हम किसी भी पदार्थ के गुण और कर्मों को बताते हैं। वेदों में प्रकृति और उस प्रकृति के संचालक एवं नियामक के स्वरूप को बताया गया है, जो प्रत्येक मनुष्य को जानने योग्य है। संस्कृत भाषा देवों के स्वरूप बताने के कारण देवों की भाषा कहलाती है। प्रकृति और उसके नियामक के स्वरूप को जानने के लिए संस्कृत भाषा का महत्व सर्वदा रहेगा ।[27]संस्कृति का अर्थ है परिमार्जित संस्कारों से युक्त मनुष्यों की सभ्यता। हमारी आत्मा, हमारी अस्मिता, भारत की भारतीयता उसकी संस्कृति में है, जिसका प्राण संस्कृत भाषा है। संस्कृति व्यक्ति के विकास के साथ-साथ आंतरिक विकास की भी बोधक होती है।इसका लक्ष्य व्यक्ति का विकास और प्रकृति का संतुलन है। भाषा संस्कृति की वाहिका होती है। भारतीय संस्कृति के सभी पक्षों जैसे ऐतिहासिक, आर्थिक, धार्मिक, प्राकृतिक, राजनैतिक तथा कला, ज्ञान, विज्ञान आदि का सूक्ष्म तथा वास्तविक ज्ञान संस्कृत भाषा के माध्यम से ही हो सकता है।संस्कृत भाषा में वैदिक साहित्य से अतिरिक्त भी अन्य सभी विद्याओं तथा ज्ञान-विज्ञान का बहुत सूक्ष्म अध्ययन उपलब्ध है। संस्कृत हमारे दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कवियों, नाटककारों, व्याकरण आचार्यों आदि की भाषा थी। इसके माध्यम से भारत की उत्कृष्टतम मनीषा, प्रतिभा, अमूल्य चिंतन, मनन, विवेक, रचनात्मक, सर्जना और वैचारिक प्रज्ञा का अभिव्यंजन हुआ है।व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनी और पतंजली (अष्टाध्यायी और महाभाष्य के लेखक) के समतुल्य पूरे विश्व भर में कोई दूसरा नहीं है। खगोलशास्त्र और गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर के कार्यों ने मानव जगत को नवीन मार्ग दिखाया। वहीं औषधि के क्षेत्र में चरक और सुश्रुत ने महत्वपूर्ण कार्य किया।[28]

दर्शन के क्षेत्र में गौतम (न्याय व्यवस्था के जन्मदाता) शंकराचार्य बृहस्पति आदि ने पूरे विश्व भर में विस्तृत दार्शनिक व्यवस्था को प्रतिपादित किया है। ये सब ग्रंथ संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता तथा तार्किकता के द्योतक हैं क्योंकि किसी भी विषय को कम से कम शब्दों में सूत्र रूप में कहना उस भाषा की वैज्ञानिकता को बताता है।संस्कृत भाषा इतनी सक्षम है कि इसमें तकनीकि विचारों को पूरे विशुद्धता, तार्किकता और सुस्पष्टता के साथ व्यक्त किया जा सकता है। विज्ञान में परिशुद्धता कि आवश्यकता होती है, साथ ही विज्ञान को एक लिखित भाषा की जरूरत होती है, जिसमें विचारों को पूरे स्पष्टता और तार्किकता के साथ व्यक्त किया जा सके।जैसे- अंग्रेजी के 'A' से 'Z' तक के वर्णों को किसी तार्किक आधार पर व्यवस्थित नहीं किया गया है। इसके पीछे कोई विशेष कारण नहीं है कि F, G से पहले क्यों आता है या P, Q से पहले क्यों आता है? अंग्रेजी के वर्णों को यादृच्छता के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। जबकि दूसरी तरफ, पाणिनी ने अपने पहले 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा को अत्यंत वैज्ञानिक व तार्किक आधार पर व्यवस्थित किया है।संस्कृत के अतिरिक्त विश्व की किसी और भाषा के वर्णों को इस तरह से तार्किक व वैज्ञानिक रूप से नहीं रखा गया है। इस तरह से हम देखते हैं कि संस्कृत भाषा में छोटे-छोटे विषयों को कितनी गंभीरता से लिया गया है, बड़े-बड़े विषयों पर कितनी गहराई से चिंतन किया गया होगा।संस्कृत के बारे में इंग्लैंड के विद्वान और एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के फोर्ट विलियम के न्यायाधीश सर विलियम जोन्स ने 1786 में कहा था कि संस्कृत भाषा की प्राचीनता जो भी हो, यह एक अद्भुत संरचना है। यह ग्रीक भाषा से अधिक परिपूर्ण, लैटिन भाषा से अधिक समृद्ध और इन दोनों की अपेक्षा अधिक शुद्ध और मनोहारी है।अत: ऐसी वैज्ञानिक भाषा के अध्ययन से व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास होता है।संस्कृत भाषा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह व्यष्टि से समष्टि को तथा परमेष्टि को जोड़ती है।[29] उसकी प्रत्येक प्रार्थना में विश्व बंधुत्व की भावना व्याप्त है। जो विपुल ज्ञान भंडार संस्कृत में है, उसे देश की प्रगति और मानवता के कल्याण के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।संस्कृत के बारे में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा है, "यदि कोई मुझसे पूछता है कि भारत के पास बहुमूल्य खजाना क्या है और इसके पास सबसे बड़ी धरोहर क्या है, तो मैं बेहिचक कह सकता हूँ कि वह खजाना संस्कृत भाषा और उसमें निहित समस्त वांगमय है। यह एक महत्त्वपूर्ण विरासत है। यह जब तक सक्रिय रहेगी और हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करेगी, तब तक भारत की आधारभूत बुद्धिमत्ता बनी रहेगी।"[30]

संस्कृत भाषा से ही विश्व की अनेक भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। विश्व की अधिकांश भाषाओं में संस्कृत भाषा के शब्द मिश्रित हैं, जो उनके व्यावहारिक प्रयोग को सरल करने में सहायक हैं।संस्कृत भाषा हमारी भारतीय भाषाओं को भी बहुत सशक्त करती है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 251 में स्पष्टत: उल्लेख है कि 'हम भारतीय भाषाओं को सशक्त करेंगे और भारतीय भाषाओं के विकास और समृद्धि के लिए संस्कृत अहम भूमिका निभाएगी।'[11]

यह संस्कृत की ही विशिष्टता और सुंदरता है कि यदि संस्कृत में 'आकाश:' बोलते हैं, तो हिंदी में 'आकाश', तेलुगु में 'आकाशमु' और कन्नड़ में 'आकाशवु' बोलते हैं। इसी प्रकार संस्कृत में यदि 'भूमि:' बोलते हैं, तो हिंदी, तेलुगु और कन्नड़ में भी 'भूमि' ही बोलते हैं।संस्कृत से अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना करने पर अनेक मौलिक समानताओं को देखा जा सकता है। इस तथ्य को वैश्विक संदर्भ में देखने पर संस्कृत की अनेक पाश्चात्य भाषाओं में अंत: समानताएँ ज्ञात होती हैं।तुलनात्मक भाषा विज्ञान के अध्ययन में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

विद्वानों ने संस्कृत की ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं से समानता को प्रदर्शित किया है और संस्कृत भाषा को ही तुलनात्मक भाषा विज्ञान का जनक माना है। अंग्रेजी और संस्कृत में भी अनेक समानताएँ स्पष्टत: दिखाई देती हैं, जिनके आधार पर संस्कृत से अंग्रेजी की उत्पत्ति मान सकते हैं।जैसे माँ को संस्कृत में 'मातर' बोलते हैं तो अंग्रेजी में उसी को 'मदर' बोलते हैं। बेटी को संस्कृत में 'दुहितर' बोलते हैं, तो अंग्रेजी में 'डॉटर' बोलते हैं। इस प्रकार से देखा जाए, तो दुनिया की दर्जनों भाषाओं में संस्कृत का विपुल शब्द भंडार व्याप्त है।इस प्रकार संस्कृत भाषा और इसके समृद्ध साहित्य का महत्व सहज ही स्पष्ट हो जाता है। प्राचीनता, अविच्छिन्नता, वैज्ञानिकता, व्यापकता, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्य तथा कलात्मक दृष्टि से ही नहीं अपितु धर्म व दर्शन के विचारात्मक अध्ययन की दृष्टि से भी संस्कृत भाषा का अपना निजी महत्त्व है।[12]

यहाँ साहित्य शब्द का प्रयोग "वाङ्मय" के लिए है। ऊपर वेद संहिताओं का उल्लेख हुआ है। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनकी अनेक शाखाएँ थीं जिनमें बहुत सी लुप्त हो चुकी हैं और कुछ सुरक्षित बच गई हैं जिनके संहिताग्रंथ हमें आज उपलब्ध हैं। इन्हीं की शाखाओं से संबद्ध ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् नामक ग्रंथों का विशाल वाङ्मय प्राप्त है। वेदांगों में सर्वप्रमुख कल्पसूत्र हैं जिनके अवांतर वर्गों के रूप में और सूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र (शुल्बसूत्र भी है) का भी व्यापक साहित्य बचा हुआ है। इन्हीं की व्याख्या के रूप में समयानुसार धर्मसंहिताओं और स्मृतिग्रंथों का जो प्रचुर वाङ्मय बना, मनुस्मृति का उनमें प्रमुख स्थान है। वेदांगों में शिक्षा-प्रातिशाख्य, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद शास्त्र से संबद्ध ग्रंथों का वैदिकोत्तर काल से निर्माण होता रहा है। अब तक इन सबका विशाल साहित्य उपलब्ध है। आज ज्योतिष की तीन शाखाएँ-गणित,[13] सिद्धांत और फलित विकसित हो चुकी हैं और भारतीय गणितज्ञों की विश्व की बहुत सी मौलिक देन हैं। पाणिनि और उनसे पूर्वकालीन तथा परवर्ती वैयाकरणों द्वारा जाने कितने व्याकरणों की रचना हुई जिनमें पाणिनि का व्याकरण-संप्रदाय 2500 वर्षों से प्रतिष्ठित माना गया और आज विश्व भर में उसकी महिमा मान्य हो चुकी है। पाणिनीय व्याकरण को त्रिमुनि व्याकरण भी कहते हैं, क्योंकि पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि इन तीन मुनियों के सत्प्रयास से यह व्याकरण पूर्णता को प्राप्त किया। यास्क का निरुक्त पाणिनि से पूर्वकाल का ग्रंथ है और उससे भी पहले निरुक्तिविद्या के अनेक आचार्य प्रसिद्ध हो चुके थे। शिक्षाप्रातिशाख्य ग्रंथों में कदाचित् ध्वनिविज्ञान, शास्त्र आदि का जितना प्राचीन और वैज्ञानिक विवेचन भारत की संस्कृत भाषा में हुआ है- वह अतुलनीय और आश्चर्यकारी है। उपवेद के रूप में चिकित्साविज्ञान के रूप में आयुर्वेद विद्या का वैदिकाल से ही प्रचार था और उसके पंडिताग्रंथ (चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, भेडसंहिता आदि) [14]प्राचीन भारतीय मनीषा के वैज्ञानिक अध्ययन की विस्मयकारी निधि है। इस विद्या के भी विशाल वाङ्मय का कालांतर में निर्माण हुआ। इसी प्रकार धनुर्वेद और राजनीति, गांधर्ववेद आदि को उपवेद कहा गया है तथा इनके विषय को लेकर ग्रंथ के रूप में अथवा प्रसंगतिर्गत सन्दर्भों में पर्याप्त विचार मिलता है। वेद, वेदांग, उपवेद आदि के अतिरिक्त संस्कृत वाङ्मय में दर्शनशास्त्र का वाङ्मय भी अत्यंत विशाल है। पूर्वमीमांसा, उत्तर मीमांसा, सांख्य, योग, वैशेषिक और न्याय-इन छह प्रमुख आस्तिक दर्शनों के अतिरिक्त पचासों से अधिक आस्तिक-नास्तिक दर्शनों के नाम तथा उनके वाङ्मय उपलब्ध हैं जिनमें आत्मा, परमात्मा, जीवन, जगत्पदार्थमीमांसा, तत्वमीमांसा आदि के सन्दर्भ में अत्यंत प्रौढ़ विचार हुआ है। आस्तिक षड्दर्शनों के प्रवर्तक आचार्यों के रूप में व्यास, जैमिनि, कपिल, पतंजि, कणाद, गौतम आदि के नाम संस्कृत साहित्य में अमर हैं।[15]अन्य आस्तिक दर्शनों में शैव, वैष्णव, तांत्रिक आदि सैकड़ों दर्शन आते हैं। आस्तिकेतर दर्शनों में बौद्धदर्शनों, जैनदर्शनों आदि के संस्कृत ग्रंथ बड़े ही प्रौढ़ और मौलिक हैं। इनमें गंभीर विवेचन हुआ है तथा उनकी विपुल ग्रंथराशि आज भी उपलब्ध है। चार्वाक, लोकायतिक, गार्हपत्य आदि नास्तिक दर्शनों का उल्लेख भी मिलता है। वेदप्रामण्य को माननेवाले आस्तिक और तदितर नास्तिक के आचार्यों और मनीषियों ने अत्यंत प्रचुर मात्रा में दार्शनिक वाङ्मय का निर्माण किया है। दर्शन सूत्र के टीकाकार के रूप में परमादृत शंकराचार्य का नाम संस्कृत साहित्य में अमर है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, वात्स्यायन का कामसूत्र, भरत का नाट्यशास्त्र आदि संस्कृत के कुछ ऐसे अमूल्य ग्रंथरत्न हैं - जिनका समस्त संसार के प्राचीन वाङ्मय में स्थान है।[16]

वैदिक वाङ्मय के अनंतर सांस्कृतिक दृष्टि से वाल्मीकि के रामायण और व्यास के महाभारत की भारत में सर्वोच्च प्रतिष्ठा मानी गई है। महाभारत का आज उपलब्ध स्वरूप एक लाख पद्यों का है। प्राचीन भारत की पौराणिक गाथाओं, समाजशास्त्रीय मान्यताओं, दार्शनिक आध्यात्मिक दृष्टियों, मिथकों, भारतीय ऐतिहासिक जीवनचित्रों आदि के साथ-साथ पौराणिक इतिहास, भूगोल और परंपरा का महाभारत महाकोश है। वाल्मीकि रामायण आद्य लौकिक महाकाव्य है। उसकी गणना आज भी विश्व के उच्चतम काव्यों में की जाती है। इनके अतिरिक्त अष्टादश पुराणों और उपपुराणादिकों का महाविशाल वाङ्मय है जिनमें पौराणिक या मिथकीय पद्धति से केवल आर्यों का ही नहीं, भारत की समस्त जनता और जातियों का सांस्कृति इतिहास अनुबद्ध है। इन पुराणकार मनीषियों ने भारत और भारत के बाहर से आयात सांस्कृति एवं आध्यात्मिक ऐक्य की प्रतिष्ठा का सहस्राब्दियों तक सफल प्रयास करते हुए भारतीय सांस्कृति को एकसूत्रता में आबद्ध किया है।[17]

संस्कृत के लोकसाहित्य के आदिकवि वाल्मीकि के बाद गद्य-पद्य के लाखों श्रव्यकाव्यों और दृश्यकाव्यरूप नाटकों की रचना होती चली जिनमें अधिकांश लुप्त या नष्ट हो गए। पर जो स्वल्पांश आज उपलब्ध है, सारा विश्व उसका महत्त्व स्वीकार करता है। कवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक को विश्व के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में स्थान प्राप्त है। अश्वघोष, भास, भवभूति, बाणभट्ट, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, शूद्रक, विशाखदत्त आदि कवि और नाटककारों को अपने अपने क्षेत्रों में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त है। सर्जनात्मक नाटकों के विचार से भी भारत का नाटक साहित्य अत्यंत संपन्न और महत्वशाली है। साहित्यशास्त्रीय समालोचन पद्धति के विचार से नाट्यशास्त्र और साहित्यशास्त्र के अत्यंत प्रौढ़, विवेचनपूर्ण और मौलिक प्रचुरसख्यक कृतियों का संस्कृत में निर्माण हुआ है। सिद्धांत की दृष्टि से रसवाद और ध्वनिवाद के विचारों को मौलिक और अत्यंत व्यापक चिंतन माना जाता है। स्तोत्र, नीति और सुभाषित के भी अनेक उच्च कोटि के ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त शिल्प, कला, संगीत, नृत्य आदि उन सभी विषयों के प्रौढ़ ग्रंथ संस्कृत भाषा के माध्यम से निर्मित हुए हैं जिनका किसी भी प्रकार से आदिमध्यकालीन भारतीय जीवन में किसी पक्ष के साथ संबंध रहा है। ऐसा समझा जाता है कि द्यूतविद्या, चौरविद्या आदि जैसे विषयों पर ग्रंथ बनाना भी संस्कृत पंडितों ने नहीं छोड़ा था। एक बात और थी। भारतीय लोकजीवन में संस्कृत की ऐसी शास्त्रीय प्रतिष्ठा रही है कि ग्रंथों की मान्यता के लिए संस्कृत में रचना को आवश्यक माना जाता था। इसी कारण बौद्धों और जैनों, के दर्शन, धर्मसिद्धान्त, पुराणगाथा आदि नाना पक्षों के हजारों ग्रंथों को पालि या प्राकृत में ही नहीं संस्कृत में सप्रयास रचना हुई है। संस्कृत विद्या की न जाने कितनी महत्वपूर्ण शाखाओं का यहाँ उल्लख भी अल्पस्थानता के कारण नहीं किया जा सकता है। परंतु निष्कर्ष रूप से पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भारत की प्राचीन संस्कृत भाषा-अत्यंत समर्थ, संपन्न और ऐतिहासिक महत्त्व की भाषा है। इस प्राचीन वाणी का वाङ्मय भी अत्यंत व्यापक, सर्वतोमुखी, मानवतावादी तथा परमसंपन्न रहा है। विश्व की भाषा और साहित्य में संस्कृत भाषा और साहित्य का स्थान अत्यंत महत्वशाली है। समस्त विश्व के प्रच्यविद्याप्रेमियों ने संस्कृत को जो प्रतिष्ठा और उच्चासन दिया है, उसके लिए भारत के संस्कृतप्रेमी सदा कृतज्ञ बने रहेंगे।[18]

परिणाम

संस्कृत भाषा देववाणी कहलाती है। यह न केवल भारत की ही महत्त्व पूर्ण भाषा है। अपितु विश्व की प्राचीनतम व श्रेष्ठतम भाषा मानी जाती है।कुछ समय पहले कुछ पाश्चात्य विद्वानों द्वारा मिश्र देश के साहित्य को प्राचीनतम माना जाता था परन्तु अब सभी विद्वान् एक मत से संस्कृत के प्रथम ग्रंथ वेद (ऋग्वेद) को सबसे प्राचीन मानते है।हिंदू धर्म से संबंधित लगभग सभी धार्मिक ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं। बौद्ध धर्म विशेषकर महायान तथा जैन धर्म के भी कई महत्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं। आज भी यज्ञ और पूजा मे संस्कृत मंत्रों का ही प्रयोग किया जाता है।संस्कृत में मानव जीवन के लिए उपयोगी चारों पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का विवेचन बड़े ही विस्तार से किया गया है। अत: संस्कृत केवल धर्म प्रधान ही है ऐसा नहीं है।भौतिकवाद दर्शन से सम्बंधित विषयों पर भी प्राचीन ग्रंथकारों का ध्यान गया था। कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक विख्यात ग्रंथ है जिसनमें राजनीतिशास्त्र विषयक सारी जानकारी मिलती है। वात्स्यायन द्वारा रचित काम-शास्त्र में गृहस्थ जीवन के लिए क्या करना चाहिए अच्छे ढंग से बताया गया है।प्राचीन भारतीय जीवन में धर्म को ही अधिक महत्व देने के कारण संस्कृत धार्मिक दृष्टि से भी विशेष गौरव रखता है। साथ ही भारतीय धर्म [19]और दर्शन का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेद का अध्ययन तथा ज्ञान बहुत ज़रूरी है।वेद वह मूल स्रोत्र है जहां से विभिन प्रकार की धार्मिक धाराएँ निकल कर मानव हदय को सदा संतुष्ट करती आई हैं, केवल भारतवासियों के लिए ही नहीं बल्कि अन्य देशों तथा पुरे विश्व के लिए भी मार्गदर्शक के रूप में है।वेदों के प्रभाव का ही फल है कि पश्चिमी विद्वानों ने तुलनात्मक पुराणशास्त्र जैसे नवीन शास्त्र को ढंढ़ निकाला। इस शास्त्र से पता चलता है कि प्राचीन काल में देवताओं के संबंध में लोगों के क्या-क्या विचार थे और किन-किन उपासनाओं के प्रकारों से वे उनकी कृपा प्राप्त करने में सफल होते थे।विशुद्ध कलात्मक दृष्टि से भी संस्कृत साहित्य का अपना विशेष महत्व है। इस साहित्य में कालिदास जैसे कमनीय कविता लिखने वाले कवि हुए। भवभूति जैसे महान् नाटककार हुए।[20]

बाणभट्ट जैसे गद्य लेखक हुए जिसने अपने सरस काव्य से त्रिलोकसुंदरी कादम्बरी की कमनीय कथा सुना-सुनाकर श्रोताओं को अपना भक्त बनाया, जयदेव जैसे गीतिकाव्य के लेखक विद्यमान थे जिन्होंने अपनी कोमलकांतपदावली के द्वारा सहदयों के चित्त में मध वर्षा की,श्री हर्ष जैसे पंडित हुए जिन्होंने काव्य और दर्शन का अपूर्व संमिश्रण किया। इस प्रकार इस समृद्ध साहित्य का महत्व अपने आप ही स्पष्ट हो जाता है।प्राचीनता, अविच्छिन्नता, व्यापकता, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्य तथा कलात्मक दृष्टि से ही नहीं अपितु धर्म व दर्शन के विचारात्मक अध्ययन की दृष्टि से भी संस्कृत भाषा का अपना निजी महत्त्व है।संस्कृत भाषा एक विश्वव्यापी भाषा है, पुनरपि भारत सरकार इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही, सरकार की ओर से संस्कृत भाषा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए। विद्यालयों में भी अनिवार्य रूप से अध्ययन अध्यापन होना चाहिए।प्रत्येक भारतीय को भी अपनी भारती (संस्कृत भाषा) का अध्ययन अवश्य करना चाहिए और यत्न करना चाहिए कि निकट भविष्य में ही संस्कृत भाषा राष्ट्र भाषा बने तभी हम भारत के भाषा संबंधी प्रान्तीयता आदि के कलह को दूर भगा सकते हैं और तभी हम संसार में सच्ची विश्वशाँति की स्थापना कर सकते हैं।[21]

वाणी में जो मृदुता भर दे, वह है संस्कृत भाषा,
उद्धत को जो विनम्र बना दे, वह है संस्कृत भाषा,
जीवन का जो सार सिखा दे, वह है संस्कृत भाषा,
पाषाण हृदय को जो पिघला दे, वह है संस्कृत भाषा,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

असंस्कृत को जो सुसंस्कृत कर दे, वह है संस्कृत भाषा॥1॥

विद्वत्ता का जो मान बढ़ा दे, वह है संस्कृत भाषा,
स्त्री का जो सम्मान सिखा दे, वह है संस्कृत भाषा,
कवियों का जो स्वाभिमान बढ़ा दे, वह है संस्कृत भाषा,
बड़ों की महिमा का जो भान करा दे, वह है संस्कृत भाषा,
गुरु की गरिमा का जो गुणगान सिखा दे, वह है संस्कृत भाषा ॥2॥

अज्ञेय को ज्ञेय बना दे, वह है संस्कृत भाषा,
कायर को जो वीर बना दे, वह है संस्कृत भाषा,
नीरस को जो सरस कर दे, वह है संस्कृत भाषा,
भाषा का जो समलंकृत कर दे, वह है संस्कृत भाषा,
शुष्क हृदय को जो भावों से भर दे, वह है संस्कृत भाषा॥3॥[22]

अन्तर्मन का जो दर्शन करा दे, वह है संस्कृत भाषा,
दुःखितों के प्रति जो करुणा भर दे, वह है संस्कृत भाषा,
खिन्नमनस् को जो प्रफुल्लित कर दे, वह है संस्कृत भाषा,
त्रिविधदुःखमुक्ति का जो मार्ग दिखा दे, वह है संस्कृत भाषा,
निःस्पृहता का जो भाव सिखा दे, वह है संस्कृत भाषा॥4॥

राजनीति का जो रंग बता दे, वह है संस्कृत भाषा,
अर्थशास्त्र का जो अर्थ बता दे, वह है संस्कृत भाषा,
इतिहास का जो इतिहास बता दे, वह है संस्कृत भाषा,
विज्ञान का जो विशिष्ट ज्ञान करा दे, वह है संस्कृत भाषा,
हिन्दी का जो संवर्धन कर दे, वह है संस्कृत भाषा ॥5॥

भूगोल का जो क्षेत्र बता दे, वह है संस्कृत भाषा,
दर्शन को जो दृष्टि दिखा दे, वह है संस्कृत भाषा,
गणित का जो गणित बना दे, वह है संस्कृत भाषा,
वाणिज्य का जो व्यापार सिखा दे, वह है संस्कृत भाषा,
समाजशास्त्र का जो संज्ञान करा दे, वह है संस्कृत भाषा ॥6॥

रोगों का जो उपचार बता दे, वह है संस्कृत भाषा,
अकिंकर्तव्य को जो कर्म सिखा दे, वह है संस्कृत भाषा,
दुःखितों के प्रति जो करुणा भर दे, वह है संस्कृत भाषा,
नैराश्य को जो आशान्वित कर दे, वह है संस्कृत भाषा,
'वसुधैव कुटुम्बकम्' का जो पाठ पढ़ा दे, वह है संस्कृत भाषा॥7॥[23]

संस्कृत साहित्य की महानता को प्रसिद्ध भारतविद जुआन मस्कारो (Juan Mascaro) ने इन शब्दों में वर्णन किया है:

> Sanskrit literature is a great literature. We have the great songs of the Vedas, the splendor of the Upanishds, the glory of the Bhagvat-Gita, the vastness (100,000 verses) of the Mahabaharat, the tenderness and the heroism found in the Ramayana, the wisdom of the fables and stories of India, the scientific philosophy of Sankhya, the psychological philosophy of Vedanta, the Laws of Manu, the grammar of Panini and other scientific writings, the lyrical poetry, and dramas of Kalidas. Sanskrit literature, on the whole, is a romantic interwoven with idealism and practical wisdom, and with a passionate longing for spiritual vision.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

संस्कृत साहित्य की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है:

अति विस्तृत रचना-काल

संस्कृत साहित्य की रचना अति प्राचीन काल (हजारों वर्ष ईसापूर्व) से लेकर अब तक निरन्तर चली आ रही है।[24]

अति-विस्तृत क्षेत्र

संस्कृत साहित्य की रचना भारत और भारत से बाहर के देशों में हुई है। जो पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं वे ऊतर-से दक्षिण और पूर्व-से-पश्चिम तक कई हजार किमी के विस्तृत क्षेत्र से हैं।

विशालता (abundance and vastness)

संस्कृत साहित्य इतना विशाल और विविधतापूर्ण है कि 'संस्कृत में क्या-क्या है?' - यह पूछने के बजाय प्रायः पूछा जाता है कि 'संस्कृते किं नास्ति?' (संस्कृत में क्या नहीं है?)। अनुमान है कि संस्कृत की पाण्डुलिपियों की कुल संख्या ३ करोड़ से भी अधिक होगी, यह संख्या ग्रीक और लैटिन पाण्डुलिपियों की सम्मिलित संख्या से सौ गुना से अधिक है।[1] यह इतनी अधिक है कि बहुत सी पाण्डुलिपियाँ अभी तक सूचीबद्ध नहीं की सकी है, उन्हे पढ़ना और उनका अनुवाद आदि करना बहुत दूर की बात है।[2]

विविधता (variety and diversity)

संस्कृत साहित्य की विविधता आश्चर्यचकित करने वाली है। इसमें धर्म और दर्शन, नाटक, कथा, काव्य आदि तो हैं ही, इसमें गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, रसायन विज्ञान, रसशास्त्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, शिल्प, कृषि आदि में रचित ग्रन्थों की संख्या कई लाख है। इसी तरह व्याकरण, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान, संगीत, कोश, कला, राजनीति, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, सुभाषित के भी असंख्य ग्रन्थ हैं।[25]

सातत्य

प्राप्त पाण्डुलिपियों से स्वयं स्पष्ट है कि भारतीय महाखण्ड पर इतने सारे दैवी एवं मानवी आपदाओं (विदेशी आक्रमणों) के बावजूद हर कालखण्ड में संस्कृत साहित्य की रचना निर्बाध होती रही।

प्रगतिशीलता

संस्कृत साहित्य अत्यन्त प्रगत साहित्य है। उसमें सदा आगे बढ़ने और नयी उंचाइयाँ छूने की प्रवृत्ति है। उसमें सबसे प्राचीन व्याकरण ग्रन्थ है, सबसे प्राचीन शब्दकोश है, सबसे प्राचीन भाषावैज्ञानिक चिन्तन है। उसमें प्राचीनतम दर्शन है, तर्कशास्त्र है, गणित है, चिकित्साशास्त्र है, विधिशास्त्र है। उसमें नीति और धर्म का जो चिन्तन हुआ है वह उच्च कोटि का है। दर्शन को ही लें तो उसमें अनीश्वरवाद सहित विविध मतमतान्तरों का समावेश है। उसमें शास्त्रार्थ करने और ग्रन्थों के भाष्य लिखने तथा आवश्यक होने पर खण्डन तक करने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

मौलिकता (originality)

किसी दूसरी भाषा से अनूदित संस्कृत के ग्रन्थों की संख्या नहीं के बराबर है। इसके विपरीत संस्कृत के ग्रन्थों का विश्व भर में आदर था/है जिसके कारण अनेकों संस्कृत ग्रन्थों का अरबी, फारसी, तिब्बती, चीनी आदि में अनुवाद हुआ। हाँ संस्कृत के किसी ग्रन्थ पर अन्य लोगों द्वारा संस्कृत में ही टीका ग्रन्थ (भाष्य) लिखने की परम्परा अवश्य रही है।[26]

गम्भीरता (depth)

सभी विधाओं के ग्रन्थों में लिये गये विषय का चिन्तन अत्यन्त गहराई तक हुआ है, चाहे वह साहित्यशास्त्र हो, व्याकरण हो, आयुर्वेद हो या नीतिशास्त्र या कामशास्त्र।

उत्कृष्टता (excellence)

आज के युग के वैज्ञानिको ने भी यह माना हे कि नई पीढ़ी के कम्प्यूटर के लिये संस्कृत ही सर्वोतम भाषा हे

वैज्ञानिकता

संस्कृत साहित्य अधिकांशतः अधार्मिक (या सेक्युलर) प्रकृति का है जिसे आज के युग के हिसाब से भी वैज्ञानिक कहा जा सकता है। उसमें गणित है, खगोलविज्ञान है, आयुर्विज्ञान (मेडिसिन) है, भाषाविज्ञान है, तर्कशास्त्र है, दर्शनशास्त्र है, रसशास्त्र (रसायन) है। गणित में भी केवल अंकगणित ही नहीं है, ज्यामिति भी है, ठोस ज्यामिति भी, बीजगणित (अल्जेब्रा) भी, त्रिकोणमिति भी और कैलकुलस भी।[27]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

पन्थनिरपेक्षता

इतना प्राचीन होने के बावजूद संस्कृत साहित्य का अधिकांश भाग सेक्युलर तथा अधार्मिक (non-religious) है।[1]

निष्कर्ष

आज के युग में विज्ञान एक ओर हमारे चारों ओर के भौतिक संसार और दूसरी ओर मानवीय जीवन के हर पहलू से संबंधित है। किन्तु उसका संबंध उच्च विज्ञान से है, अर्थात् मनुष्य के आंतरिक जगत् उसकी भावनाएं तथा आध्यात्मिक ज्ञान से। यदि हम संस्कृत साहित्य की विषय वस्तु का अध्ययन करें तो हमें अनुभूति होती है कि इस साहित्य में मानव की जीवात्मा का शाखा विस्तार कितनी अद्भुत विविधता के साथ किया गया है।भारत के दार्शनिक साहित्य के विषय में कहा जाता है कि भारतवर्ष दर्शन का घर है। वैदिक काल से लेकर आज तक श्री अरविन्द और राधा कृष्णन् जैसी महान् विभूतियों के योगदान से मानविकी के विषय में भारतीय मनीषा बहुत सफल हुई है। भारतीय दर्शन में न केवल परम सत्य और विषयों की प्रकृति को समझने के लिए पद्धतियों की खोज की गई है बल्कि जीवन में इसके कुछ उपयोगी परिणाम भी प्राप्त हुए हैं। [28]दर्शन शास्त्र के अध्ययन से भारतवासियों को भद्र और सुसंस्कृत व्यवहार करने की प्रेरणा मिली है। भारतीय दर्शन ने सिखाया है कि तर्क और अंतज्ञ्र्ञान पर आधारित अपने विचारों पर दृढ़ रह कर दूसरों के विचारों की मान्यता भी स्वीकार करनी चाहिए। भारतीय मानस दर्शन के विभिन्न विचारों का सत्कार करने की क्षमता रखता है। उसी से भारत के लोगों में मानवोचित सहृदयता और दयाभाव जैसे गुण पाये जाते हैं। दर्शन के इस प्रभाव से भारतवासी अन्य विचारधारा के लोगों के प्रति अत्याचार अथवा अलगाववाद की भावना से सर्वथा अनजान हैं। यह भारत के जीवन दर्शन का प्रभाव है और यह भारत का दर्शन संस्कृत साहित्य में विद्यमान है।[29] यह एक मिथ्या विचार है कि संस्कृत केवल पुरोहिताई पूजा-पाठ की भाषा है और इसका क्षेत्र परम्परागत हिंदू धर्म के सिद्धान्तों प्रथाओं तथा पूजापद्धतियों तक ही सीमित है। संस्कृत भाषा में तकनीकी वैज्ञानिक धर्मनिरपेक्ष साहित्य प्रचुरमात्रा में उपलब्ध है। राज्य व्यवस्था से संबंधित कौटिलय का अर्थशास्त्र (राजनीति शास्त्र) वास्तुकला पर लिखे गए मानसर-समरांगणसूत्रधार तथा कलाओं से संबंधित अनेक ग्रन्थों को निश्चित रूप से धार्मिक नहीं कहा जा सकता। यहां यह बताना भी आवश्यक है कि संस्कृत साहित्य का यह अथाह भंडार किसी एक विशेष जाति द्वारा नहीं रचा गया। अहिंदू तथा अब्राह्मण व्यक्तियों द्वारा संस्कृत साहित्य को दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के भी अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। अत: संस्कृत को केवल हिंदुओं के धार्मिक साहित्य की भाषा कहना सर्वथा गलत है।वर्तमान भारत में देश विखण्डन की प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं। अत: भारतीय एकता को सुदृढ़ करने की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। हमारी महान विरासत संस्कृत प्रांतीय भाषाओं, साहित्य व संस्कृति को जोडऩे वाली स्वर्णिम कड़ी है। यदि हम संगठित भारतीय राष्ट्र की संकल्पना को संकट में डालना नहीं चाहते तो हमें संस्कृत को अपनाना होगा। संस्कृत के ऐसे अनेक श्लोक तथा सूक्तियां है। जिनमें उच्च नैतिकता के भावों का समावेश है। उत्कृष्ट प्रबोधन के बहुमूल्य भावों का प्रदर्शन है। यद्यपि भारतीयता के महान आदर्श कोमल युवा मस्तिष्क को मातृ भाषा में रचित वृत्तान्त व कृतियों के माध्यम से उपलब्ध कराये जा सकते हैं परन्तु मूलसंस्कृत के उच्चारण तथा प्रबोधन में अधिकार का एक स्वर है एवं भाषा के उच्चारण में एक मधुर आकर्षण है जो मस्तिष्क में सदा के लिए अंकित हो जाता है तथा मनुष्य के स्वभाव का अंग बन जाता है। संस्कृत के सुरीलेपन व सुमधुरता में वह शक्ति है जो हमें स्वयं (भौतिक स्वरूप से) ऊपर उठने की प्रेरणा देती है।[30] संस्कृत पठन अथवा गायन से हमें अपने हृदय को उन्नत करने का संदेश प्राप्त होता है और यह संस्कृत के अत्यंत सूक्ष्म एवं सुरुचिपूर्ण एवं गतिशील मूल्यों में से एक है। हजारों व्यक्तियों के अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अखिल भारतीय संस्कृति की सुनिश्चितता व राजनीतिक एकता के अतिरिक्त चरित्र निर्माण व उत्कृष्ट भावों के सृजन हेतु संस्कृत भाषा का ज्ञान भारतीय युवकों की शिक्षा का आवश्यक अंग होना चाहिए।स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यह तथ्य स्वीकार कर लिया गया कि भारतीय संघ की मान्यता प्राप्त आधुनिक भाषाओं को बाधा रहित विकास की सुविधा प्राप्त होनी चाहिए। परन्तु अब यह अनुभव किया जा रहा है कि हमारी आधुनिक भाषाएं गंभीर दार्शनिक विचारों व जटिल वैज्ञानिक विचारों की प्रस्तुति हेतु पूर्णरूप से विकसित नहीं है। सभी भाषाओं में उचित शब्दों का अभाव अखिल भारतीय आधार पर प्रत्यक्ष रूप से संस्कृत से लेकर अथवा संस्कृत धातुओं तथा निर्मित नवीन शब्दों द्वारा पूरा किया जा सकता है। यह भी स्वीकार किया गया कि हम एक बहुभाषी राष्ट्र हैं, अत: शिक्षा के शासन के सभी स्तरों पर सम्पूर्ण देश के लिए एक भाषा निश्चित नहीं की जा सकती, आत्मीय साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए और भी नहीं, अत: अखिल भारतीय एकता के उद्देश्य से हमें तकीनीकी शब्दों की किसी एकरूप व्यवस्था का निर्माण करना चाहिए। ऐसा तंत्र केवल संस्कृत भाषा से ही निर्मित हो सकता है। श्री सीडी देशमुख ने अपने साक्ष्य में कहा था कि 'संस्कृत में नए शब्दों की रचना का सामथ्र्य अद्भुत है। अतएव सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के हित में संस्कृत का संरक्षण संवर्धन व विकास अत्यन्त आवश्यक है।आधुनिक भारतीय भाषाओं की पोषक भाषा के कारण लगभग सभी भाषाओं की उच्च शैली में संस्कृत शब्दों की भरमार मिलती है। संस्कृत के सहयोग से भारतीय, कहीं भी, यहां तक कि तमिल क्षेत्र में भी अत्यन्त सुविधापूर्वक, बृहत् शब्दावली प्राप्त कर लेते हैं, जो लोकप्रिय अखिल भारतीय संस्कृत से संबंधित हैं। आज भारत में संस्कृत एक मृत भाषा नहीं है, जैसे मध्य युग में यूरोप में लैटिन मृत भाषा नहीं थी। संस्कृत आज भी जीवित है। राष्ट्रीय संस्कृति व एकता के इस ओजस्वी स्रोत की उपेक्षा करना इसे मृत व अनुपयोगी मानकर विस्मृति के गर्त में धकेल देना एक आत्मघाती प्रयास होगा।आधुनिक विज्ञान व दर्शन के इतिहास के अध्ययन से हमें ज्ञात होता है[25] कि इन क्षेत्रों में भारत के योगदान की उपेक्षा होती रही है। न केवल

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

पश्चिमी राष्ट्रों के लोग दार्शनिक विचारों व भौतिक विज्ञान के विकास भारत के योगदान से अपरिचित हैं अपितु भारतीय विद्वान व विद्यार्थी भी अपने देश की उपलब्धियों से अनभिज्ञ हैं। यह अति आवश्यक है कि स्वतंत्र भारत में संस्कृत का पूर्ण तथा मुक्त अध्ययन किया जाए ताकि हमें सामान्य दार्शनिक विचार व विज्ञान के क्षेत्र में भारत के परिणामकारी योगदान का ज्ञान हो सके। तर्कशास्त्र, साहित्यिक आलोचना तथा राज्यतंत्र के विषय में भी यही कहा जा सकता है। हमारे आधुनिक पाठ्यक्रम में इन सभी विषयों में भारत के योगदान पर किए गए शोध निष्कर्षों को विज्ञान की विभिन्न शाखाओं व अन्य विषयों के इतिहास में सम्मिलित करना चाहिए। राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान जैसी मान्य संस्था का ध्यान इस आवश्यकता की ओर आकर्षित हुआ है तथा उन्होंने मूल संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन व व्याख्या के आधार पर औषध विज्ञान के इतिहास के विषय में अन्वेषण आरम्भ किया है। इस प्रकार इन दिशाओं में संस्कृत अध्ययन से आधुनिक विज्ञान के जन्म व इतिहास के विषय में ज्ञान वृद्धि हो सकती है। यूनेस्को ने भी इस दिशा में रुचि दिखाई है ताकि पश्चिम के विश्वविद्यालयों के विभिन्न विषयों के विद्यार्थी भी प्राच्य सभ्यता के योगदान के विषय को जान सकें।[26] संविधान में उल्लिखित है कि राष्ट्रभाषा का विकास मुख्यरूपेण संस्कृत से होना चाहिए। इस बात से राज्य का यह विशेष दायित्व बन जाता है कि संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहित करने और उसे आगे बढ़ाने के लिए तदनुरूप ही उपाय करें तथा उसी के अनुसार साधन जुटाएं। संस्कृत भाषा भारत की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने वाली हमारी सब से बड़ी शक्तियों में से एक है जिस पर राजनीतिक एकता भी निर्भर है।संस्कृत आजीविका की भाषा न होने के कारण एक सामान्य व्यक्ति उसके बौद्धिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति कम से कम सजग और उत्साहित रहता है। किन्तु जो विचारक और प्रशासन शिक्षा की संतुलित योजना का निर्माण करने तथा राष्ट्रीय एकता को सशक्त बनाने के इच्छुक हैं, उनका यह दायित्व हो जाता है कि वे इस प्रकार का प्रोत्साहन उपलब्ध कराएं जिससे कि युवा विद्यार्थियों को वह सब कुछ प्राप्त हो सके, जो आवश्यक है और जिससे वे अन्यथा वंचित रह जाते हैं।संस्कृत के महत्व को वैश्विक स्वीकृति मिली हुई है। यदि इस स्वीकृति को व्यावहारिक रूप दिया जाना है तथा मात्र एक पवित्र भावना के रूप में इसे भाप बनकर उड़ नहीं जाने देना है तो अधिकारियों को कुछ अवश्य करना चाहिए, चाहे इसके लिए उन्हें लीक से कुछ हटना ही क्यों न पड़े।[30]

संदर्भ

1. संस्कृत भाषा और साहित्य (हिन्दी) भारतखोज। अभिगमन तिथि: 27 फरवरी, 2015।
2. ↑ प्रागादर्शात्प्रत्यक्कालकवनाद्दक्षिणेन हिमवंतमुत्तरेण वारियात्रमेतस्मिन्नार्यावर्तं आर्यानिवासे..... (महाभाष्य, 6।3।109)
3. ↑ वैदिक संस्कृत, अवस्ता अर्थात् प्राचीनतम पारसी ग्रीक, प्राचीन गॉथिक तथा प्राचीनतम जर्मन, लैटिन, प्राचीनतम आइरिश तथा नाना वेल्ट बोलियाँ, प्राचीनतम स्लाव एवं बाल्टिक भाषाएँ, अरमीनियन, हित्ती, बुखारी आदि।
4. ↑ जिसे मूल आर्यभाषा, आद्य आर्यभाषा, इंडोजर्मनिक भाषा, आद्य-भारत-योरोपीय भाषा, फादरलैंग्वेज आदि।
5. ↑ दोनों ही शतवात्तक शब्द
6. ↑ जिनमें अवस्ता, पहलवी, फ़ारसी, ईरानी, पश्तो आदि बहुत-सी प्राचीन नवीन भाषाएँ हैं।
7. ↑ जैसा आधुनिक इतिहासज्ञ लिपिशास्त्री मानते हैं।
8. ↑ 'चरकसंहिता', 'सुश्रुतसंहिता', 'भेडसंहिता' आदि।
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास (मूल लेखक - वेङ्क्ट वरदाचार्य ; हिन्दी अनुवादक - डॉ कपिलदेव द्विवेदी)
10. Census of Exact Sciences in Sanskrit (गूगल पुस्तक ; संग्रहकर्ता : डेविड पिंग्री, शिकागो विश्वविद्यालय)
11. संस्कृत साहित्य सोपान (गूगल पुस्तक ; लेखिका - कौमोदकी)
12. भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृत पर आधारित शोध प्रबन्धों की निर्देशिका (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान)
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास (अंग्रेजी में)
14. Social Conscience in Sanskrit Literature By Daniel James Bisgaard
15. A Dictionary of Indian Literature By Sujit Mukherjee
16. A companion to Sanskrit literature (Google books; By Suresh Chandra Banerji)
17. A survey of Sanskrit Koshas
18. संस्कृत विकिपुस्तक (Wikibooks)
19. विकिस्रोत संस्कृत
20. संस्कृत के अनेकानेक ग्रन्थ, देवनागरी में
21. वैदिक साहित्य : महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय - पी डी एफ़ प्रारूप, देवनागरी
22. गौडीय ग्रन्थ-मन्दिर पर सहस्रों संस्कृत ग्रन्थ, बलराम इनकोडिंग में
23. सहस्रों संस्कृत ग्रन्थ, अनेक स्रोतों से, अनेक इनकोडिंग में
24. TITUS Indica - Indic Texts

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

25. Internet Sacred Text Archive - यहाँ बहुत से हिन्दू ग्रन्थ अंग्रेजी में अर्थ के साथ उपलब्ध हैं। कहीं-कहीं मूल संस्कृत पाठ भी उपलब्ध है।
26. क्ले संस्कृत पुस्तकालय संस्कृत साहित्य के प्रकाशक हैं; यहाँ पर भी बहुत सारी सामग्री डाउनलोड के लिये उपलब्ध है।
27. The wonder that is Sanskrit
28. Indian Kāvya literature, Part 1 (गूगल पुस्तक; लेखक - A. K. Warder)
29. संस्कृत ग्रंथावली तथा लेखक - यहाँ लगभग १५०० संस्कृत साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं की सूची दी हुई है।
30. विभिन्न विषयों के संस्कृत ग्रन्थ

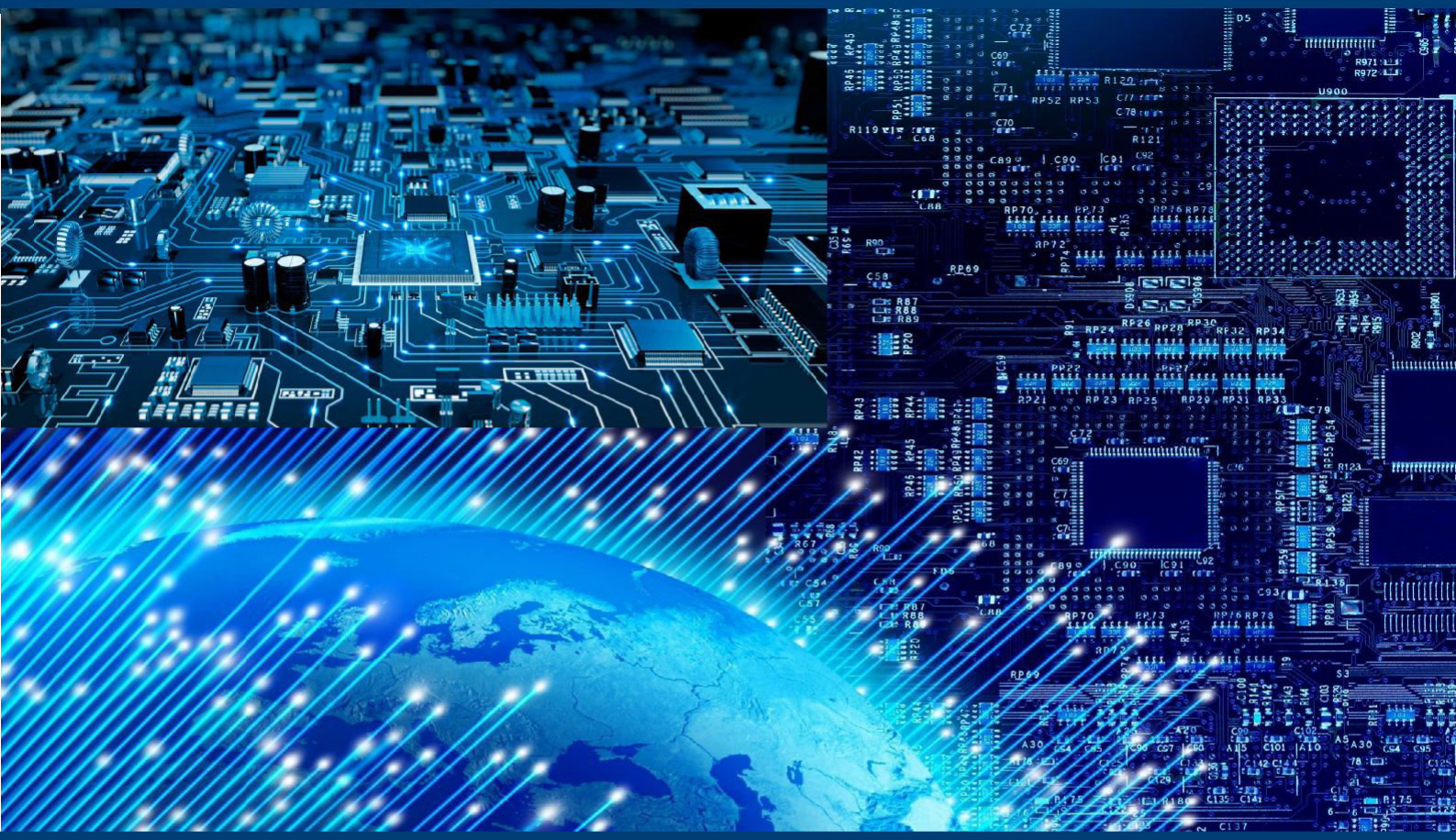

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |